2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए

'निर्मला' उपन्यास राष्ट्रभाषा हिन्दी

लेखक - मुंशी प्रेमचन्द अ० दि० - पत्र

शास्त्री प्रथम खण्ड

प्रश्न :- निर्मला उपन्यास के आधार पर डॉ० भुवनमोहन सिन्हा की माता रंगीलीबाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :- निर्मला उपन्यास में नारी-पात्र रंगीलीबाई डॉ० भुवन-मोहन सिन्हा की माता और बाबू भालचन्द्र की पत्नी है। उपन्यास में उसकी भूमिका बहुत कम है। इसके बावजूद भी लेखक उसके चरित्र की मुख्य-मुख्य खूबियों को प्रस्तुत करने में सफल रहा है।

रंगीलीबाई सुन्दर व्यक्तित्व वाली नारी है। लेखक के शब्दों में उसकी सुन्दरता इस प्रकार है- "गोरे मुख की प्रसन्नमुख महिला थी। रूप और यौवन उससे विदा हो रहे थे, पर किसी प्रेमी मित्र की भाँति मचल-मचल कर तीस साल तक जिसके गले से लगे रहे, उसे छोड़ते न बनता था।"

रंगीलीबाई अपने पति के समान दहेज का समर्थन करती है। वह भी शादी-ब्याह में दहेज को प्रमुख मानती है। निर्मला के पिता के देहान्त के बाद वह अपने पुत्र की शादी वहाँ करने से इन्कार कर देती है। पति ने कहा कि मुझे कहने में संकोच हो रहा है, तो वह बोलती है- "साफ बात कहने में संकोच क्या? हमारी इच्छा है नहीं करते, किसी का कुछ लिया तो नहीं है। जब दूसरी जगह दस हजार नगद मिल रहे हैं, तो वहाँ क्यों न करूँ? उनकी लड़की कोई सोने के थोड़े ही है। वकील साहब जीते होते तो शरमाते-शरमाते पन्द्रह-बीस हजार दे मरते। अब यहाँ क्या रखा है।"

जब वह निर्मला की माँ का पत्र पढ़ती है तो उसका हृदय द्रवित हो जाता है और ब्राह्मण को बैठे देखकर वह कहती है- "है, अभी है, जाकर कह दो, हम विवाह करेंगे, जरूर करेंगे। बेचारी बड़ी मुसीबत में है।

शेष आगे-

वह एक व्यवहार कुशल गृहिणी है और स्पष्टवादी भी है। वह बढ़-चढ़ कर बात करने वालों से घृणा करती है। वह सत्य के अधिक निकट रहती है। वह अपने परिवार की असलियत प्रकट करने में नहीं चुकती। जब भुवनमोहन निर्मला से शादी करने के लिये इन्कार करने पर अपनी हैसियत की बात करता है तो वह स्पष्ट शब्दों में कहती है- "आया है वहाँ से हैसियत लेकर! तुम क्याँ के धन्ना सेठ हो? कोई आदमी द्वार पर आ जाये, तो एक लोटा पानी को तरस जाय। बड़े हैसियत वाले बने हो। रंगीलीबाई का यह कथन वास्तव में उसके यथार्थ को दर्शाता है।

अतः हम कह सकते हैं कि रंगीलीबाई के चरित्र को कुछ ही अंशों में व्यक्त किया गया है। थोड़े में ही उसके उज्ज्वल चरित्र के दर्शन हो जाते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 20/4/20
एसो० प्रो० हिन्दी
सं०ऊ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

'पथिक' काव्य
कवि – श्री रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न :- 'पथिक' किस प्रकार का काव्य है?

उत्तर :- 'पथिक' एक खण्ड काव्य है। खण्डकाव्य के प्रत्येक सर्ग के प्रारम्भ में प्रकृति का वर्णन किया गया है। यह पुराना नियम है। त्रिपाठी जी ने उस पुरातन नियम की रक्षा की है। इसमें प्रभात और चाँदनी रात का आकर्षक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त वन, पर्वत, नदी और समुद्र तट इत्यादि का भी वर्णन हुआ है। प्रो० कृष्ण शंकर गुप्त का कहना है कि 'प्रकृति चित्रण' में त्रिपाठी जी ने अपनी ओर से कुछ भी नहीं मिलाया है। जो दृश्य जैसा है, मात्र वैसा ही अंकित कर देना इनकी विशेषता है।

प्रश्न :- कवि ने किस 'वाद' के कवियों का अनुसरण किया है?

उत्तर :- 'छायावादी' कवियों की तरह कवि त्रिपाठी जी ने भी यह स्वीकार किया है कि सारी प्रकृति इसी महाप्राण सत्ता से प्रभावित और परिचालित है। यथा –

उससे ही विमुग्ध हो नभ में चन्द्र विहँस देता है,
वृक्ष विविध पत्तों पुष्पों से तन को सज लेता है।

'पथिक' में एक स्थान पर जहाँ कवि ने धरती के अनमोल विमल प्रभात सामुद्रिक समीकरण के मधुर स्पर्श का मोहक और मादक चित्रण किया है, वहाँ उसने पथिक पत्नी के विषाद युक्त मुखमण्डल का भी मार्मिक चित्रण किया है।

प्रश्न :- कवि ने प्रकृति को किस दृष्टि से देखा है?

उत्तर :- कवि श्री राम नरेश त्रिपाठी ने प्रकृति को बड़े ही स्वच्छन्द और व्यापक दृष्टि से देखा है। कवि को प्रकृति का उग्र रूप स्वीकार नहीं है। इनके काव्य 'पथिक' में कल्पना से अधिक अनुभूति की गहराई है। जहाँ प्राचीन कवियों ने प्रकृति को जड़ रूप में लिया है वहाँ त्रिपाठी जी उसको चेतन स्वरूप में ग्रहण किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 20/12/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, प्र० द्वि०-पत्र
दिगंत- भाग-2 - गद्य भाग
लेखक- ओमप्रकाश वाल्मीकि
महत्वपूर्ण व्याख्या:-

प्रश्न :- "तेरा तो खानदानी काम है जा फटाफट लग जा काम पे"

उत्तर :- प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के जूठन शीर्षक पाठ से ली गयी है। इसके लेखक आधुनिक हिन्दी साहित्य के महान साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने समाज के कुरूप चित्र को चित्रित करते हुए सामाजिक बुराईयों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। यह प्रसंग हेडमास्टर और लेखक के बीच किए गए अमानवीय व्यवहार को लेकर है।

प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से यह बात स्पष्ट झलकती है कि जब हेडमास्टर साहब लेखक की जाति के बारे में जान जाते हैं कि यह अछूत जाति का है। तब उस पर धौंस जमाते हुए कहते हैं कि तू तो चूहड़ा है। तुम्हारा यह खानदानी काम साफ-सफाई करना है न कि पढ़ना। अतः तुम सफाई के काम में फटा-फट लग जा। पूरे स्कूल को शीशे की तरह सफाई करके चमका दो। प्रतिदिन लेखक से ही हेडमास्टर साफ-सफाई का काम करवाना चाहते हैं। अन्दर ही अन्दर भयभीत होकर लेखक मन मारकर यह काम करता है। स्कूल साफ करने बाद पूरे मैदान को भी साफ करने का वे आदेश देते हैं। धूल से चेहरा, सिर ढँक गया था। जहाँ सारे लड़के पढ़ते थे वहाँ वह दिनभर झाड़ू लगाता रहता था। इस प्रकार वह प्रतिदिन जाति के आधार पर जलील, शोषित होता था और गालियाँ सुनता था। इन पंक्तियों में लेखक के प्रति किए गए दुर्व्यवहारों का वर्णन है।

उक्त पंक्तियों में लेखक ने भारतीय समाज में व्याप्त जातीय असमानता, दुर्व्यवहार एवं अमानवीय शोषण-दमन, उत्पीड़न की ओर आकृष्ट

- शेष आगे-

करते हुए अपने निजी जीवन में भोगे हुए यथार्थ को रेखांकित किया है। भारतीय सामाजिक जीवन का वास्तविक स्थिति को लेखक ने पाठकों के समक्ष रखा है। यह एक गम्भीर घटना है। इसे हम सभी को मिलकर सुधारना होगा। तभी हमारा समाज एक सभ्य समाज बनेगा। समाज में समरसता का होना अतिआवश्यक है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 20/4/20
एसो० प्रो० हिन्दी
...महा वि० ...सेना, प्रीमियाँ